

## उच्च शिक्षा में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षणिक अनुभव पर उनके महाविद्यालयी वातावरण का प्रभाव

(मीरजापुर जनपद की मड़िहान तहसील में स्थित स्व वित्तपोषित महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

मकरंद जायसवाल एवं सतीश चंद्र वर्मा

<https://doi.org/10.61410/had.v21i3.347>

### सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य मीरजापुर जनपद के मड़िहान तहसील के अंतर्गत आने वाले स्व-वित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षणिक अनुभव पर महाविद्यालयी वातावरण के पड़ने वाले प्रभावों का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण को प्रस्तुत करता है। भारत सहित दुनिया के हर देशों में शिक्षा को सामाजिक प्रगति, कल्याण, न्याय एवं आर्थिक उन्नति के लिए सबसे सशक्त साधन माना जाता है। किंतु आज भी शिक्षा का ये साधन सभी समूहों तक सामान्य रूप से नहीं पहुँच पाया है। एक तरफ शहरी क्षेत्र है तो दूसरी तरफ ग्रामीण क्षेत्र। शहरी प्रवेश में भी एक तरफ ऐसी विशेष आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक स्थिति प्राप्त समूह और दूसरी ओर इससे विरक्त समूह है। शहरी एवं ग्रामीण प्रवेश के महाविद्यालयों में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की सामाजिक, सांस्कृतिक, संरचनात्मक एवं अंतरव्यक्ति समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत शोधकार्य 50 विद्यार्थियों के प्रतिदर्श के आधार पर तैयार किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु क्रॉस टेबल (सह-सारणीकरण) पद्धति का वैज्ञानिक रूप में प्रयोग करके पारिवारिक आय, निवास, शिक्षित माता-पिता और बच्चों जैसे चरों के साथ उनके शैक्षणिक अनुभव के बीच संबंधों का वैज्ञानिक परीक्षण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का निष्कर्ष ये प्रदर्शित करता है कि महाविद्यालयी वातावरण अर्ध संरचनात्मक सुविधाएं, माता-पिता का दृष्टिकोण तथा सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन एवं आत्मविश्वास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

**प्रमुख शब्द** – अनुसूचित जाति, उच्च शिक्षा, महाविद्यालयी वातावरण, शैक्षणिक अनुभव एवं विद्यार्थी।

### प्रस्तावना

भारतीय सामाजिक व्यवस्था का आधार ऐतिहासिक रूप से जाति आधारित एक स्तरीकृत संरचना का रहा है। ये स्तरीकृत सामाजिक संरचना इस प्रकार की व्यवस्था का समर्थन करती है जिसमें निचले तबके के लोगों विशेषकर शूद्र नाम बदलने के साथ आज का अनुसूचित जाति शिक्षा, संपत्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा से वंचित रह गया। आजादी के बाद से भारतीय सामाजिक व्यवस्था का आधार संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप संचालित किया गया जिसमें बहुत सारे अधिकारों की व्यवस्था सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता, न्याय, विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं तथा आरक्षण

- शोध निदेशक – समाजशास्त्र विभाग के0 बी0 पी0 जी0 कॉलेज मीरजापुर ।
- शोधार्थी – असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग के0 बी0 पी0 जी0 कॉलेज मीरजापुर ।

व्यवस्था के माध्यम से अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा तक पहुँच को सुनिश्चित करने का भरपूर प्रयास किया गया।

व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो औपचारिक अवसरों के उपलब्ध हो जाने मात्र से समानता सुनिश्चित नहीं हो जाती है। अनुभव बताते हैं कि अनुसूचित जाति का विद्यार्थी महाविद्यालय में प्रवेश तो प्राप्त कर लेता है किंतु इसके बाद भी उसे अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक स्तर पर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो विद्यार्थी के सभी प्रकार के शैक्षणिक अनुभव को प्रभावित करती है।

महाविद्यालय का महाविद्यालयी वातावरण केवल भौतिक संरचना मात्र नहीं होता है बल्कि महाविद्यालय, शिक्षक का दृष्टिकोण, सहपाठियों के साथ सामाजिक क्रियाओं का कुशलतापूर्वक संचालन, संस्था द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण हेतु नीतियाँ, छात्रावास एवं पुस्तकालय जैसी सुविधाएँ तथा महाविद्यालय का सामाजिक, सांस्कृतिक प्रवेश, कौशल विकास के लिए संचालित कार्यक्रम, सेमिनार एवं संवाद आदि को शामिल किया जाता है। भारत के संदर्भ में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने शिक्षा को सामाजिक मुक्ति का सबसे प्रभावशाली साधन मानते थे इसलिए उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि जब तक शैक्षणिक संस्थाओं की आंतरिक एवं बाह्य संरचना को जातिगत भावना से मुक्त नहीं किया जाएगा तब तक शिक्षा के वास्तविक लाभ को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

उत्तर प्रदेश के मीरजापुर जनपद की गिनती सबसे पिछड़े हुए जनपदों में की जाती है। मीरजापुर के मड़ियान तहसील की स्थिति अर्ध ग्रामीण एवं अनुसूचित जनजाति क्षेत्र है। इस क्षेत्र में स्थित स्व-वित्तपोषित महाविद्यालय ही अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के उच्च शिक्षा के अध्ययन के लिए मुख्य साधन है। ऐसे क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालय शहरी क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों के वातावरण से एकदम अलग होते हैं। जिसका प्रभाव यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों पर विशिष्ट रूप से पड़ता है। अभी हाल में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा माँ विंध्यावासिनी विश्वविद्यालय का निर्माण कार्य इसी मड़ियान तहसील क्षेत्र में किया जा रहा है जो शायद इस क्षेत्र के विद्यार्थियों को एक नया अनुभव दे पाएगा। प्रस्तुत शोध इसी सामाजिक सांस्कृतिक सच्चाई की समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है।

### अध्ययन की समस्या

“महाविद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों का शैक्षणिक अनुभव: उच्च पारिवारिक आय वर्ग के विद्यार्थियों के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।”

### साहित्य समीक्षा

हमारे देश में जाति और शिक्षा व्यवस्था के अंतः क्रिया पर आधारित समाजशास्त्रीय साहित्य पर्याप्त संख्या में उपलब्ध है। सुखदेव थोराट एवं अन्य विद्वानों ने अपने शोधकार्यों में यह पाया कि उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को कक्षाओं के आंतरिक एवं बाह्य, दोनों स्तरों पर सूक्ष्म एवं प्रत्यक्ष असमानताओं का सामना करना पड़ता है, जो अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों शैक्षणिक उपलब्धि तथा मानसिक स्वास्थ्य दोनों को प्रभावित करता है। सतीश देशपांडे ने अपने शोधकार्यों के आधार पर ये तर्क दिया है कि भारतीय विश्वविद्यालयों की संस्थागत संस्कृति

अक्सर सवर्ण मानदंडों पर आधारित होती है, जिसका प्रभाव होता है कि वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को अपने को उस संस्कृति के अनुरूप ढालने के साथ साथ अनेक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का भार वहन करना पड़ता है।

राष्ट्रीय स्तर के सर्वेक्षणों एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की रिपोर्टों के परिणामों से भी ये स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा छोड़ने की दर अन्य वर्गों की तुलना में कहीं अधिक है, जिसका प्रमुख कारण आर्थिक समस्याओं के साथ-साथ महाविद्यालयी वातावरण में अनुभव की जाने वाली सामाजिक असुरक्षा एवं अलगाव की भावना है। लेकिन, ग्रामीण एवं तहसील स्तर के छोटे स्व-वित्तपोषित महाविद्यालयों पर केंद्रित सूक्ष्म-स्तरीय अध्ययन आज भी अपेक्षाकृत सीमित संख्या में उपलब्ध हैं, इसी लिए इस क्षेत्र में मौलिक अनुभवजन्य शोधकार्य की आवश्यकता है।

### अध्ययन के उद्देश्य

- 1- महाविद्यालयी वातावरण के प्रति सकारात्मक धारणा रखने वाले विद्यार्थियों के शैक्षणिक अनुभव का पता लगाना।
- 2- महाविद्यालयी वातावरण का उच्च पारिवारिक आय वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक अनुभव पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।

### शोध उपकल्पनाएँ

- 1- महाविद्यालयी वातावरण के प्रति सकारात्मक धारणा रखने वाले विद्यार्थियों का शैक्षणिक अनुभव उच्च है।
- 2- महाविद्यालयी वातावरण का उच्च पारिवारिक आय वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक अनुभव पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

### शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधकार्य मीरजापुर जनपद के मड़िहान तहसील के दो (एस ० एस ०पी ०डी० महाविद्यालय तीसुही, मड़िहान एवं कृषक पी०जी० महाविद्यालय राजगढ़ मड़िहान) महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर आधारित है। अध्ययन हेतु स्तरीकृत यद्विच्छिन्न प्रतिवर्ग चयन विधि है) का प्रयोग कर महाविद्यालयों के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति के 50 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया है। प्राथमिक तथ्यों के संग्रह हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया तथा द्वितीय तथ्यों के संग्रह हेतु महाविद्यालय के प्रशासनिक अभिलेखों, पूर्व में प्रकाशित, अप्रकाशित पत्र, पत्रिकाओं, सरकारी गजट एवं पुस्तकों आदि का प्रयोग किया गया।

### आंकड़ों का विश्लेषण

एकत्रित तथ्यों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी क्रॉस टेबुलेशन (साह सारणीकरण) तथा प्रतिशत पद्धति की सहायता से किया गया है। क्रॉस टेबल का प्रयोग यह जानने के लिए किया गया है कि दो या दो से अधिक चरों जैसे महाविद्यालयी वातावरण तथा शैक्षणिक अनुभव के बीच किस प्रकार का संबंध विद्यमान है। इस प्रकार की पद्धतियों का समाजशास्त्र के शोधकार्यों में विशेष रूप से

उपयोगी होती है क्योंकि यह सामाजिक चरों के बीच अंतर संबंधों को अधिक स्पष्ट एवं संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करती है।

### अध्ययन की सीमाएं

प्रस्तुत शोधकार्य मीरजापुर जनपद के मड़िहान तहसील में स्थित महाविद्यालयों तक सीमित होने के कारण इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण सीमित सीमा तक ही संभव है। इसके अतिरिक्त, आत्म-प्रतिवेदित तथ्यों में सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह जैसी संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता।

### आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोधकार्य में एकत्रित प्राथमिक आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण टेबल एवं क्रॉस टेबल का प्रयोग किया गया है। कुल प्रतिदर्श आकार 50 है।

#### 1-1 पारिवारिक मासिक आय एवं महाविद्यालय वातावरण की धारणा का सामान्य विवरण

| चर                            | श्रेणी                 | संख्या | प्रतिशत |
|-------------------------------|------------------------|--------|---------|
| पारिवारिक मासिक आय            | निम्न (₹10,000 से कम)  | 19     | 38.0    |
|                               | मध्यम (₹10,000–20,000) | 18     | 36.0    |
|                               | उच्च (₹20,000 से अधिक) | 13     | 26.0    |
| महाविद्यालयी वातावरण की धारणा | सकारात्मक              | 21     | 42.0    |
|                               | तटस्थ                  | 18     | 36.0    |
|                               | नकारात्मक              | 11     | 22.0    |

प्रतिदर्श में निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के विद्यार्थियों का बहुमत 74% है, जबकि उच्च आय वर्ग के विद्यार्थी प्रतिदर्श का 26% भाग हैं। महाविद्यालयी वातावरण के प्रति सकारात्मक धारणा रखने वाले विद्यार्थी 42% हैं, जो विश्लेषण के लिए पर्याप्त आधार प्रदान करते हैं।

#### 1.2 महाविद्यालयी वातावरण की धारणा एवं शैक्षणिक अनुभव

| वातावरण के प्रति धारणा | उच्च शैक्षणिक अनुभव | मध्यम शैक्षणिक अनुभव | निम्न शैक्षणिक अनुभव | कुल       |
|------------------------|---------------------|----------------------|----------------------|-----------|
| सकारात्मक (24)         | 16(66.7%)           | 6(25%)               | 2 (8.3%)             | 24 (100%) |
| उदासीन (18)            | 4 (22.2%)           | 9 (50%)              | 5 (27.8%)            | 18 (100%) |
| नकारात्मक (8)          | 1 (12.5%)           | 2(25%)               | 5 (62.5%)            | 8 (100%)  |
| कुल (50)               | 21 (42%)            | 17(34%)              | 12 (24%)             | 50 (100%) |

उपरोक्त सारणी में उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों का विवरण दिया गया है इन आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 50 उत्तरदाताओं में से 24 उत्तरदाता ऐसे हैं जिनका अपने महाविद्यालयी वातावरण के साथ सकारात्मक सम्बन्ध है। इन 24 उत्तरदाताओं में से कुल (16) 66.7 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है जिनकी शैक्षणिक अनुभव उच्च, (6) 25 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है जिनकी शैक्षणिक अनुभव मध्यम (2) 8.3 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है जिनकी शैक्षणिक अनुभव निम्न है। 50 उत्तरदाताओं में से 18 उत्तरदाता ऐसे हैं जिनका अपने महाविद्यालयी वातावरण के साथ उदासीन सम्बन्ध है। इन 18 उत्तरदाताओं में से कुल (4) 22.2 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है जिनकी शैक्षणिक अनुभव उच्च (9) 50 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है जिनकी शैक्षणिक अनुभव मध्यम (5) 27.8 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है जिनकी शैक्षणिक अनुभव निम्न है। 50 उत्तरदाताओं में से 8 उत्तरदाता ऐसे हैं जिनका अपने महाविद्यालयी वातावरण के साथ नकारात्मक सम्बन्ध है। इन 8 उत्तरदाताओं में से कुल (1) 12.5 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है जिनकी शैक्षणिक अनुभव उच्च, (2) 25 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है जिनकी शैक्षणिक अनुभव मध्यम (5) 62.5 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है जिनकी शैक्षणिक अनुभव निम्न है। शिक्षकों का सहानुभूतिपूर्ण एवं समावेशी व्यवहार अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान एवं शैक्षणिक भागीदारी को सुदृढ़ करने में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

अध्ययन के परिणाम स्वरूप ये निष्कर्ष प्राप्त होता है कि 50 उत्तरदाताओं में से जिन 24 उत्तरदाताओं की महाविद्यालयी वातावरण के प्रति धारणा सकारात्मक है उनमें से (16) 66.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं का शैक्षणिक अनुभव उच्च है, जबकि मात्र (2) 8.3 प्रतिशत उत्तरदाता का निम्न अनुभव है। भी पर इस के विपरीत, नकारात्मक धारणा रखने वाले उत्तरदाताओं में उच्च अनुभव की दर मात्र (1) 12.5 प्रतिशत रही, जबकि (5) 62.5 प्रतिशत ने निम्न शैक्षणिक अनुभव की धारणा रखते हैं। धारणा की श्रेणी में सुधार के साथ-साथ उच्च शैक्षणिक अनुभव की दर में क्रमिक एवं सुसंगत वृद्धि (66.7 प्रतिशत → 22.2 प्रतिशत → 12.5 प्रतिशत स्पष्ट रूप से एक सकारात्मक रैखिक संबंध को दर्शाती है। यह प्रवृत्ति सांख्यिकीय एवं गुणात्मक दोनों दृष्टियों से परिकल्पना 1 की दृढ़ता से पुष्टि करती है अर्थात् महाविद्यालयी वातावरण के प्रति सकारात्मक धारणा रखने वाले विद्यार्थियों का शैक्षणिक अनुभव वास्तव में उच्च होता है।

### 1.3 पारिवारिक आय वर्ग एवं शैक्षणिक अनुभव

| पारिवारिक आय वर्ग            | निम्न शैक्षणिक अनुभव | मध्यम शैक्षणिक अनुभव | उच्च शैक्षणिक अनुभव | कुल       |
|------------------------------|----------------------|----------------------|---------------------|-----------|
| निम्न आय 10000 (23)          | 16 (69.6%)           | 6 (26.1%)            | 1 (4.3%)            | 23 (100%) |
| मध्यम आय 10000 से 20000 (17) | 4 (23.5%)            | 5 (29.4%)            | 8 (47.1%)           | 17 (100%) |
| उच्च आय 20000 से अधिक (10)   | 1 (10%)              | 2 (20%)              | 7 (70%)             | 10 (100%) |
| कुल (50)                     | 21 (42%)             | 13 (26%)             | 16 (32%)            | 50 (100%) |

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण के परिणाम स्वरूप यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कुल 50 उत्तरदाताओं में से 10 उत्तरदाता ऐसे हैं जिनके परिवार की मासिक आय ₹20000 से अधिक है इन 10 उत्तरदाताओं में से (7)70 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिनके शैक्षणिक अनुभव उच्च हैं जबकि 50 में से 23 परिवार ऐसे हैं जिनके परिवार की मासिक आय ₹10000 से कम है। 23 उत्तरदाताओं में से (16)69.6 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिनके शैक्षणिक अनुभव निम्न हैं। 23 में से केवल (1) 4.3 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिनके शैक्षणिक अनुभव उच्च हैं।

अतः कहा जा सकता है कि परिवार की उच्च मासिक आय विद्यार्थियों के शैक्षणिक अनुभव पर सकारात्मक प्रभाव डालती है परिवार की आर्थिक स्थिति उत्तरदाताओं के अध्ययन अध्यापन हेतु आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता में सहायता करता है जैसे पुस्तकों, ट्यूशन फीस, यातायात व्यय आदि।

#### 1.4 उच्च आय वर्ग में वातावरण-धारणा एवं शैक्षणिक अनुभव

प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पना 2 के गहन एवं सूक्ष्म रूप से जँचने के लिए आवश्यक था कि केवल आय के प्रत्यक्ष प्रभाव को न देखकर या भी परखा जाना चाहिए कि उच्च आय वर्ग के भीतर महाविद्यालय वातावरण किस प्रकार शैक्षणिक अनुभव को प्रभावित करता है। इस कार्य हेतु उच्च वर्ग के कुल 13 उत्तरदाताओं को अलग कर उनके अंतः वातावरणीय धारणा एवं शैक्षणिक अनुभव का त्रि चर सह सारणीकरण प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है जो निम्न है।

| वातावरण की धारणा (केवल उच्च आय वर्ग, 13) | उच्च शैक्षणिक अनुभव | मध्यम शैक्षणिक अनुभव | निम्नशैक्षणिक अनुभव | कुल      |
|------------------------------------------|---------------------|----------------------|---------------------|----------|
| सकारात्मक (8)                            | 7 (87.5%)           | 1 (12.5%)            | 0 (0.0%)            | 8(100%)  |
| तटस्थ (4)                                | 1 (25.0%)           | 3 (75.0%)            | 0 (0.0%)            | 4(100%)  |
| नकारात्मक (1)                            | 0 (0.0%)            | 0(0.0%)              | 1 (100.0%)          | 1(100%)  |
| कुल (13)                                 | 8 (61.5%)           | 4 (30.8%)            | 1 (7.7%)            | 13(100%) |

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण के आधार पर ये निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उच्च आय वर्ग के कुल 13 विद्यार्थियों में से 8 विद्यार्थियों की वातावरण के प्रति धारणा सकारात्मक है, और उनका उच्च शैक्षणिक अनुभव अत्यंत उच्च (87.5%) है तथा निम्न अनुभव का कोई भी मामला दर्ज नहीं हुआ। जब की इसके विपरीत, नकारात्मक धारणा वाला एकमात्र विद्यार्थी निम्न शैक्षणिक अनुभव की श्रेणी में पाया गया।

अतः यह स्पष्ट होता है कि उच्च पारिवारिक आय, महाविद्यालयी वातावरण के साथ मिलकर, शैक्षणिक अनुभव को अधिक सुदृढ़ करती है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आर्थिक संसाधन तथा अनुकूल संस्थागत वातावरण एक दूसरे को अधिक मजबूत करते हैं। महाविद्यालयी वातावरण का यह सकारात्मक प्रभाव आय स्तर से अंतःक्रिया के माध्यम से और अधिक प्रबल हो जाता है।

### 1.5 आय एवं वातावरण-धारणा के बीच अंतःक्रिया प्रभाव

| पारिवारिक आय वर्ग | उच्च शैक्षणिक अनुभव की दर<br>(सकारात्मक धारणा वाले उपसमूह में) | उच्च शैक्षणिक अनुभव की दर<br>(तटस्थ/नकारात्मक धारणा वाले उपसमूह में) |
|-------------------|----------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------|
| निम्न आय (19)     | 30.0% (10 में से 3)                                            | 11.1% (9 में से 1)                                                   |
| मध्यम आय (18)     | 55.6% (9 में से 5)                                             | 22.2% (9 में से 2)                                                   |
| उच्च आय (13)      | 87.5% (8 में से 7)                                             | 20.0% (5 में से 1)                                                   |

उपरोक्त सारणी से प्रदर्शित होता है कि सभी आय वर्ग में सकारात्मक वातावरण-धारणा उच्च शैक्षणिक अनुभव की दर को अधिक बढ़ाती है, किंतु यह वृद्धि उच्च आय वर्ग में विशेष रूप से सर्वाधिक स्पष्ट है (20.0% से 87.5% तक)। जिसके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उच्च आय वर्ग के विद्यार्थी अपनी बेहतर आर्थिक स्थिति के कारण इस सकारात्मक वातावरण का अधिकतम लाभ उठाते हैं। यद्यपि सकारात्मक वातावरण-धारणा सभी आय वर्गों के विद्यार्थियों के लिए लाभकारी है।

#### निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधकार्य के निष्कर्ष दोनों शोध परिकल्पनाओं की दृढ़ता से पुष्टि करते हैं। अध्ययन में सारणी 1.2 से स्पष्ट है कि जो विद्यार्थी महाविद्यालयी वातावरण के प्रति सकारात्मक धारणा रखते हैं, ऐसे सभी विद्यार्थियों का शैक्षणिक अनुभव नकारात्मक अथवा तटस्थ धारणा रखने वाले विद्यार्थियों से तुलनात्मक रूप से उच्च होता है, इस प्रकार अध्ययन की सारणी संख्या 1.3, 1.4, 1.5 से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि जिन विद्यार्थियों के परिवार की पारिवारिक आय उच्च है साथ ही साथ उनका अपने महाविद्यालय वातावरण के साथ सकारात्मक संबंध है ऐसे विद्यार्थी महाविद्यालय वातावरण का अधिक से अधिक लाभ उठाते हैं। प्राप्त निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि महाविद्यालय वातावरण एक तटस्थ संरचना नहीं है, महाविद्यालय वातावरण एवं विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण विशेष कर परिवार के आर्थिक स्थिति और उसकी व्यक्तिपरक धारणा के साथ अंतः क्रिया करते हुए अपने शैक्षणिक अनुभव के अनुरूप शैक्षणिक लाभ उठाते हैं।

#### सुझाव

- उन कारकों पर अधिक से अधिक सुधार की जरूरत है जो महाविद्यालयी वातावरण के प्रति नकारात्मक धारणा बनाते हैं। जैसे शिक्षकों का व्यवहार, अवसंरचना की गुणवत्ता तथा संस्थागत संवाद की पारदर्शिता।
- महाविद्यालयी वातावरण का उच्च आय वाले परिवारों के विद्यार्थियों पर प्रभाव इस ओर ध्यान केंद्रित करता है कि सरकारों को निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क

अतिरिक्त कक्षाएं, तथा डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए, ताकि आय-आधारित असमानता को कम किया जा सके।

- विद्यार्थियों में महाविद्यालयी वातावरण के प्रति सकारात्मक धारणा विकसित करने हेतु नियमित प्रतिक्रिया तंत्र तथा विद्यार्थी-प्रशासन संवाद मंच स्थापित किए जाने चाहिए।
- शिक्षकों की शिक्षण पद्धतियों में संवेदनशील एवं समावेशी प्रशिक्षित को सामिल किया जाना चाहिए, ताकि सभी आय वर्गों तथा पृष्ठभूमियों के विद्यार्थी समान और एकरूपता को अनुभव करें।
- भविष्य में होने वाले शोध में अन्य चरों, जैसे निवास स्थान, लिंग तथा प्रथम-पीढ़ी शिक्षार्थी की स्थिति, को भी सम्मिलित कर बहु-चर विश्लेषण को बढ़ाया जा सके, जिससे शैक्षणिक अनुभव को प्रभावित करने वाले कारकों की अधिक व्यापक समझ विकसित हो सके।

### संदर्भ सूची

- 1- आंबेडकर, भीमराव. जाति का विनाश. दिल्ली: सम्यक प्रकाशन.
- 2- थोराट, सुखदेव एवं नेहा (2007). "Caste and Discrimination in Indian Higher Education." Economic and Political Weekly.
- 3- देशपांडे, सतीश (2013). "Caste and Tastelessness: Towards a Biography of the General Category." Economic and Political Weekly.
- 4- Bourdieu, P. & Passeron, J.C. (1990). Reproduction in Education, Society and Culture. Sage Publications.
- 5- Coleman, J.S. (1988). "Social Capital in the Creation of Human Capital." American Journal of Sociology.
- 6- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), वार्षिक रिपोर्ट, नई दिल्ली।
- 7- अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (AISHE), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
- 8- मीरजापुर जनपद, जनगणना आंकड़े, भारत सरकार, जनगणना निदेशालय, उत्तर प्रदेश।